ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

Sarvoday Darshan ki Nikattam Anubhuti : Mahatma Gandhi

Dr. Anju Suthar

Lecturer, Department of History, Government College, Barmer, Rajasthan, India

परिचयात्मक–

सर्वोदय भारत का पुराना आर्दश है। हमारे ऋषियों ने गाया है सर्वेपि सुखिनः संतु। सर्वोदय शब्द भी नया नहीं है। जैन मुनि समंतभद्र कहते है सर्वापदामंतकरं निरंतं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव। साथ ही सर्व खल्विदं ब्रह्म, वसुधैव कुटुंबकं अथवा तत्वमसि के हमारे पुरातन आदर्शो मे सर्वोदय के सिद्धांत सदैव से ही अंतर्निहित हैं।

'सर्वोदय' एक साामासिक शब्द है जो 'सर्व' और 'उदय' के योग से बना है। सर्वोदय एक ऐसा अर्थवान शब्द है जिसका जितना अधिक चिंतन और प्रयोग हम करेंगे उतना ही अधिक अर्थ उसमें पाते जायेंगे। सर्वोदय शब्द के दो अर्थ मुख्य है– सर्वोदय अर्थात ''सबका उदय'' दूसरा ''सब प्रकार से उदय'' अथवा सर्वागीण विकास। सर्वोदय का अर्थ अलग–अलग दृष्टिकोण से अलग–अलग है जैसे भौतिकतावादी अपनी बढ़ी हुई आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है और आध्यात्मवादी ब्रह्म प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति में रत रहता है।

सर्वोदय दर्शन

सर्वोदय का आदर्श है अद्वैत और उसकी नीति है समन्वय। मानवकृत विषमता का अंत करना और प्राकृतिक विषमता को घटाना सर्वोदय है। जीवमात्र के लिए समादर और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सहानुभूति ही सर्वोदय का मार्ग है। जीवमात्र के लिए सहानुभति का यह अपूत जब जीवन में प्रवाहित होता है, तब सर्वोदय की लता में सुरभिपूर्ण सुमन खिलते हैं। डार्विन ने कहा–प्रकृति का नियम है "बड़ी मछली छोटी मछली को खाकर जीवित रहती है।" हक्सले ने कहा–"जीओ और जीने दो।" सर्वोदय कहता है–तुम दूसरों को जिलाने के लिए जीओ,दूसरों को अपना बनाने के लिए प्रेम का विस्तार करना होगा, अहिंसा का विकास करना होगा और शोषण को समाप्त कर आज के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन करना होगा।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले। विनोबा कहते हैं–"जब हम सर्वोदय का विचार करते हैं, तब ऊँच–नीच भावशाली वर्णव्यवस्था दीवार की तरह समाने खड़ी हो जाती है। उसे तोड़े बिना सर्वोदय स्थापित नहीं होगा। सर्वोदय को सफल बनाने के लिए जातिभेद मिटाना होगा और आर्थिक विषमता दूर करनी होगी। इनको मिटाने से ही सर्वोदय समाज बनेगा।"

सर्वोदय ऐसी समाजरचना चाहता है जिमें वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर किसी समुदाय का न तो संहार हो, न बहिष्कार हो। सर्वोदय की समाजरचना ऐसी होगी, जो सर्व के निर्माण और सर्व की शक्ति से सर्व के हित में चले, जिसमें कम या अधिक शारीरिक सामर्थ्य के लोगों को समाज का संरक्षण समान रूप से प्राप्त हो और सभी तुल्य पारिश्रमिक (इक्वीटेबल वेजेज) के हकदार माने जाएँ।

धनी लोगों को ट्रस्टियों के नाते सर्व के निर्माण अपना फर्ज मान लेना चाहिए। अगर धन और शक्ति का दुरूपयोग न हो तो हमारे देश की कुदरती साधन सम्पत्ति और आबोहवा जैसी है वह दुनियां में सबसे ज्यादा सुखी हो सकता है। [1]

विज्ञान और लोकतंत्र के इस युग में सर्व की क्रांति का ही मूल्य है और वही सारे विकास का मापदंड है। सर्व की क्रांति में पूँजी और बुद्धि में परस्पर संघर्ष की गुंजाइश नहीं है। वे समान स्तर पर परस्पर पूरक शक्तियाँ हैं। स्वभावतरू सर्वोदय की समाजरचना में अंतिम व्यक्ति समाज की चिंता का सबसे पहले अधिकारी है।

सर्वोदय समाज की रचना व्यक्तिगत जीवन की शुद्धि पर ही हो सकती है। जो व्रत–नियम व्यक्तिगत जीवन में मुक्ति के साधन हैं वे ही जब सामाजिक जीवन में भी व्यवहृत होंगे, तब सर्वोदय समाज बनेगा। विनोबा कहते हैं–"सर्वोदय की दृष्टि से जो समाज रचना होगी, उसका आरंभ अपने जीवन से करना होगा। निजी जीवन में असत्य, हिंसा, परिग्रह आदि हुआ तो सर्वोदय नहीं होगा, क्योंकि सर्वोदय समाज की विषमता को अहिंसा से ही मिटाना चाहता है। साम्यवादी का ध्येय भी विषमता मिटाना है, परंतु इस अच्छे साध्य के लिए वह चाहे जैसा साधन इस्तेमाल कर सकता है, परंतु सर्वोदय के लिए साधनशुद्धि भी आवश्यक है।"

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्व–

(1) पारिश्रमिक की समानता – जितना वेतन नाई को उतना ही वेतन वकील को। अनटू दि लास्ट का यह तत्व सर्वोदय में पूर्णत गृहीत है। साम्यवाद भी पारिश्रमिक में समानता चाहता है। यह तत्व दोनों में समान है।

(2) प्रतियोगिता का अभाव – प्रतियोगिता संघर्ष को जन्म देती है। साम्यवादी के लिए संघर्ष तो परम तत्व ही है। परंतु सर्वोदय संघर्ष को नहीं, सहकार को मानता है। संघर्ष में हिंसा है। सर्वोदय का सारा भवन ही अहिंसा की नींव पर खड़ा है।

(3) साधनशुद्धि – साम्यवाद साध्य की प्राप्ति के लिए साधनशुद्धि को आवश्यक नहीं मानता। सर्वोदय में साधनशुद्धि प्रमुख है। साध्य भी शुद्ध और साधन भी शुद्ध।

(4) आनुवंशिक संस्कारों से लाभ उठाने के लिए ट्रस्टीशिप की योजना – विनोबा कहते हैं संपत्ति की विषमता कृत्रिम व्यवस्था के कारण पैदा हुई है, ऐसा मानकर उसे छोड़ भी दें, तो मनुष्य की शारीरिक और बौद्धिक शक्ति की विषमता पूरी तरह दूर नहीं हो सकती। शिक्षण और नियमन से यह विषमता कुछ अंश तक कम की जा सकती। किंतु आदर्श की स्थिति में इस विषमता के सर्वथा अभाव की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए शरीर, बुद्धि और संपत्ति इन तीनों में से जो जिसे प्राप्त हो, उसे यही समझना चाहिए कि वह सबके हित के लिए ही मिली है। यही ट्रस्टशिप का भाव है। अपनी शक्ति और संपत्ति का ट्रस्टी के नाते ही मनुष्यमात्र के हित के लिए प्रयोग करना चाहिए। ट्रस्टीशिप में अपरिग्रह की भावना निहित है। साम्यवाद में आनुवंशिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। उसकी नीति तो अभिजात्य के संहार की रही है।

(5) विकेंद्रीकरण – सर्वोदय सत्ता और संपत्ति का विकेंद्रीकरण चाहता है जिससे शोषण और दमन से बचा जा सके। केंद्रीकृत औद्योगीकरण के इस युग में तो यह और भी आवश्यक हो गया है। विकेंद्रीकरण की यही प्रक्रिया जब सत्ता के विषय में लागू की जाती है, तब इसकी निष्पत्ति होती है शासनमुक्त समाज में। साम्यवादी की कल्पना में भी राजसत्ता तेज गर्मी में रखे हुए घी की तरह अंत में पिघल जानेवाली है। गांधी जी ने आदि, मध्य और अंत तीनों स्थितियों में विकेंद्रीकरण और शासनमुक्तता की बात कही है। यही सर्वोदय का मार्ग है।

Copyright to IJIRSET DOI:10.15680/IJIRSET.2017. 0612132

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

महात्मा गांधी और सर्वोदय

स्वतंत्रता से पूर्व स्वराज शब्द का जो महत्व था वही महत्व सर्वोदय शब्द का आज है। आज सर्वोदय का संपूर्ण शास्त्र विकसित हो रहा है। उसकी राजनीति, अर्थनीति, शिक्षानीति, धर्मदर्शन इत्यादि ''सर्वोदय समाज'' नामक आस्था रखने वालों का एक आध्यात्मिक भाईचारा भी बना है और ''सर्व सेवा संघ'' नामक संस्था भी है। डॉ. राममनोहर लोहिया ने गांधीवादी विचार एवं प्रवृतियों को बहुत ही नजदीक से देखा था। उनका मानना था कि सन् 1916 से चला गांधी का सर्वोदय 1948 (गांधी के हत्या के बाद) में तीन प्रकार हो चुका है। ये है सरकारी गांधीवादी, मठी गांधीवादी और कुजात गांधीवादी।

महात्मा गांधी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के पितामह थे। यदि उनको अपने समय का अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, दार्शनिक, वैद्य, शिक्षाविद, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, लेखक, कानूनविद, साहित्यकार, सौदर्यशास्त्री, संत, संयासी कहा जाय तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी अर्थात् वे सब कुछ थे। जब हम संपूर्ण गांधी वाङगमय में गांधी के विचारों में गोता लगाते है तो हमें लगता है कि उनके जीवन का लक्ष्य भारत की आजादी के साथ मानवता की वैश्विक मुक्ति से था। उनके मन में एकमात्र यही लक्ष्य था कि भारत एशिया और अफ्रीका ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की मुक्ति का नेतृत्व करें। इस नेतृत्व में उपयोगितावादिओं की तरह बहुतों की नहीं सबके हित की कामना थी। मूल रूप से गांधीवादी पद्धति का निरूपण दक्षिण अफ्रीका में सन 1906 के बाद हुआ था और गांधी जी के द्वारा समाज को सर्वोदय दर्शन के रूप में एक महत्वपूर्ण विचार प्राप्त हुआ।

सर्वोदय शब्द गांधी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा विचार है जिसमें सर्वभूत हितेश्ताः की भारतीय कल्पना, सुकरात की सत्य, साधना और रस्किन की अंत्योदय की अवधारणा सब कुछ सम्मिलित है। गांधीजी ने का था '' मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ। यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन तथा संपूर्ण जीवन का पर्याय बन चुका है।''

आज जिस अर्थ में सर्वोदय हमारे सामने प्रस्तुत है उसकी आधारशिला सर्वप्रथम गांधी जी ने रस्किन की ''अंटू दि लास्ट'' पुस्तक के संक्षिप्त गुजराती अनुवाद में रखी थी।[2] गांधी जी ने लिखा–''इस पुस्तक का उद्देश्य तो सबका उदय यानि उत्कर्ष करने का है अतः मैने इसका नाम सर्वोदय रखा है।'' सबसे नीचे की श्रेणी के जो है उनका भी उदय सर्वोदय है।[3] अंटु दि लास्ट'' पुस्तक की प्रति गांधी को अपने एक ब्रिटिश मित्र

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

हेनरी पोलक से प्राप्त हुयी थी जब वे दक्षिण अफ्रिका में वकील के रूप में काम कर रहे थे। अपनी आत्मकथा में गांधी डरबन की 24 घण्टे की उस यात्रा का जिक्र करते हैं जब उन्होनें पहली बार इस पुस्तक को पढ़ा और पूरी रात इस विचार के साथ सो नही पाये कि मुझे इस पुस्तक के अनुरूप ही अपने जीवन में परिवर्तन लाना है ।[4]

महात्मा गांधी ने 1936 में यह घोषणा की थी कि गांधीवादी नाम की कोई चीज है ही नहीं। गांधी जी मूलतः एक प्रयोगकर्ता थे इसलिए उन्होनें अपनी आत्मकथा को सत्य का प्रयोग कहा है। सत्य एवं अहिंसा का समन्वय ही उनके जीवन का लक्ष्य था। अतः उन्होनें किसी नए तथ्य या सिंद्धात का आविष्कार नहीं किया। इसलिए गांधी विचार और फिर उस पर आधारित सर्वोदय विचार का अर्थ निश्चित खाका तैयार किया हुआ जीवन का पूरा–पूरा चित्र है, वाद नहीं है। वाद का मतलब कोई ऐसा महत्वपूर्ण शास्त्र जिससे संबंधी सभी समस्याओं का जवाब हासिल कर लिया जाये तो भी गांधीवाद या सर्वोदयवाद कोई चीज नहीं है। लेकिन जीवन व्यवहार के लिए कुछ आधारभूत नैतिक एवं सामाजिक सिद्धांतों को स्वीकार करना हो तो मानना होगा कि गांधीवाद है।

गांधी कहते भी है कि समाजवाद का प्रारंभ पहले समाजवादी से होता है। अगर एक भी ऐसा समाजवादी हो, तो उस पर शून्य बढ़ाए जा सकते हैं। हर शून्य से उसकी कीमत दस गुना बढ़ जाएगी, लेकिन अगर पहला अंक शून्य हो, तो उसके आगे कितने ही शून्य बढ़ाए जाएँ, उसकी कीमत फिर भी शून्य ही रहेगी। इसीलिए गांधी जी सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, शरीर श्रम, निर्भयता, सर्वधर्मसमन्वय, अस्पृश्यता और स्वदेशी आदि व्रतों के पालन पर इतना जोर देते थे। गांधी का बाहरी आदेशों पर विश्वास नहीं था। मनुष्य के जीवन को नियमित करने के लिए वे भीतरी आदेश या सामान्य तौर पर अन्तरात्मा कही जाने वाली शक्ति के आदेश पर ज्यादा निर्भर करते थे।[5]

महात्मा गांधी ने अपने सर्वोदय दर्शन के द्वारा संघर्ष का सूत्रपात किया। महात्मा गांधी ने भारतीय जीवन मूल्यों से प्रभावित होकर सत्याग्रह, अपरिग्रह तथा सविनय अवज्ञा रूपी आंदोलनों का सूत्रपात किया। उसमें उन्हें ना सिर्फ पर्याप्त रूप से सफलता मिली बल्कि अस्पृश्यता, शराबबंदी तथा खादी ग्रामोद्योग द्वारा आर्थिक अन्याय का बहुतायत से मुकाबला भी किया गया। अन्याय का प्रतिकार ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

महात्मा गांधी के सर्वोदय दर्शन पर प्रकाश डालने पर ऐसा अभास होता है कि वर्तमान युग में जहां हिंसा, अतिसंग्रह, मतभेद, धर्मांधता, क्षेत्रवाद, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, नस्लभेद तथा राष्ट्रभेद का सर्वत्र नंगा

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

नाच हो रहा है, वहां महात्मा गांधी भारतीय संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण विश्व को बदलने के लिए सत्य और अहिंसा को मुख्य अस्त्र शस्त्र मानते है तथा सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान चाहते है। जहाँ मुठ्ठी भर लोग सुख भोग रहे है वहाँ देश की 40 प्रतिशत जनता 20 रूपये मजदूरी पर जीवन यापन कर रही है। यह गांधी के सर्वोदय दर्शन से सही सुलझाया जा सकता है। इसके साथ–साथ राज्य सत्ता, धर्म सत्ता, अर्थ सत्ता, संत सत्ता और बौद्धिक सत्ता का समन्वय करके सर्वोदय दर्शन को लागू किया जा सकता है।

मानव समाज के उत्थान के लिए विविध प्रवृतियो का विकास हुआ लेकिन वे प्रवृतियां मात्र कुएं के मेंढक के सदृश्य हो गयी। फलतः उनका वैचारिक अधिष्ठान लुप्तप्रायः हो चुका है। इसलिए गांधी ने माना कि शरीर नश्वर है तथा विचारों का कभी विनाश नहीं होता क्योंकि कहा गया है कि शब्द ही ब्रह्म है अर्थात गांधी ने शब्द की महत्ता का केवल प्रतिपादन ही नहीं किया था वरन उन्होने सर्वोदय,अंत्योदय को जिया। भारतीय समाज में व्याप्त शोषण,उत्पीड़न,आर्थिक सामाजिक विषमता पर प्रहार के साथ संयम, अपरिग्रह, त्याग द्वारा संपूर्ण भारत को आलोकित किया।

सर्वोदय कोई संप्रदान नहीं यह तो एक मानव एकता, सेवा तथा समरसता की भावना से समग्र दृष्टि है जो पूर्णरूपेण भारतीय चिंतन का पर्याय है। गांधी के अनुसार इसमें सबके अंदर परमात्मा का स्वरूप होगा। गांधी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय विचार में त्याग के द्वारा हृदय परिवर्तन, तर्क एवं अध्ययन द्वारा वैचारिक परिवर्तन, शिक्षा के द्वारा मानवता का परिवर्तन तथा पुरूषार्थ द्वारा स्तर परिवर्तन पर जोर है। इसमें डॉ. लोहिया की सप्त क्रांतियां, लोकनायक जयप्रकाश नारायण का चौखंभा राज्य, मार्क्स की वर्गविहीन व्यवस्था, गांधी का रामराज्य तथा सावरकर हेडगोवर के हिंदू राष्ट्र का साक्षात दर्शन होता है। इसमें सामाजिक व्यवस्था को बदलकर प्रेम एवं अहिंसा को स्थान मिलता है। इसमें मार्क्स की भांति साध्य साधन में भेद ने करके साध्य की प्राप्ति के लिए अहिंसा प्रेम सद्भाव मित्रता का सर्वोपरि स्थान रहता है।

सर्वोदय तथा गांधीवाद की एकरूपता को विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग–अलग प्रकार से परिभाषित किया गया हैं–

1. विनोबा भावे के अनुसार सर्वोदय का अर्थ है सर्व सेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। हम अधिकतर के सुख से नही सबके सुखी से संतुष्ट है। हम ऊँच–नीच अमीर–गरीब सबकी भलाई से ही संतुष्ट हो सकते है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

2. किशोरी लाल मशरूवाला के अनुसार गांधीवाद को हम सर्वोदयवाद तथा सत्याग्रह का मार्ग कह सकते है।
3. काका साहेब कालेलकर के अनुसार गांधीवाद को गांधी मार्ग या गांधी दृष्टि कहा जा सकता है।
4. आचार्य जे.बी. कृपलानी के अनुसार गांधीवाद को सर्वोदयकारी समान व्यवस्था कहा जा सकता है।
5. हरिभाऊ उपाध्याय के अनुसार गांधीवाद को गांधी विचार न कहकर गांधीवाद ही कहना ठीक होगा।
6. प्रख्यात मार्क्सवादी चिंतक यशपाल के अनुसार गांधी के विचारों को गांधीवाद ही कहना ठीक होगा।

उपर्युक्त विद्वानों के गांधीवाद के संबंध में प्रतिपादित विचारों से ऐसा लगता है कि गांधी ने भले ही अपने विचारों को किसी वाद से नही जोड़ा लेकिन गांधी विचार दर्शन को गांधीवाद कहना एकदम सत्य होगा। यदि हम गांधी द्वारा प्रतिपादित विचारों के परिप्रेक्ष्य में आज की व्याख्या करना चाहते है तो यह उपयुक्त होगा।

सादा जीवन—उच्च विचार

महात्मा गांधी का स्पष्ट विचार था कि अत्यधिक लालच को त्याग दे ंतो पृथ्वी समस्त जीवों की आवश्यकताओं की पूर्ति पूर्णरुपेण कर सकती है। सर्वोदय की अवधारणा में प्रत्येक व्यक्ति आवश्यकता से अधिक साधनो के बजाय सादा जीवन तथा उच्च विचार के सिद्धान्त का ही परिपालन करें। प्रत्येक व्यक्ति सच्चाई तथा ईमानदारी का जीवन व्यतीत करें और अंततः समस्त समस्याओं का समाधान संभव हो सकेगा। अधिक आय अर्जित करने वाले व्यक्ति अपनी आय को समाज हित में खर्च करें , समाज के लिए ट्रस्टी की तरह काम करें और इस प्रकार समस्त धन एवं भूमि का उपयोग सर्वजन हितार्थ किया जा सकेगा। मशीनों का उपयोग उसी सीमा तक लाभदायक है जब तक वे मनुष्यों के हितों तथा आजीविका में बाधक ना बने। इसलिए सर्वोदय समाज में मशीनों के अल्प उपयोग की बात ही स्वीकार की जाती है। गांधी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की आजीविका जितना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिए जैसा कि महान रशियन विचारक लियो टॉलस्टाय भी लिखते है।[6]

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

निष्कर्ष–

नैतिक जीवन में सहजीवन अपने आप में बड़ा मूल्य है। जिस व्यवहार की अपेक्षा हम खुद करते है वही बर्ताव दूसरो के साथ भी करें। महात्मा गांधी के अनुसार व्यक्ति का कल्याण समाज कल्याण में निहित है अतः सहजीवन कोई परमार्थ का सूत्र नहीं बल्कि जीवन का आधार है। लेकिन सहजीवन की साधना साम्ययोग के बिना संभव नहीं है,इसलिए सर्वोदय विचार की यह मान्यता है कि चाहे वकील का काम हो या नाई का दोनो का मूल्य बराबर है। सर्वोदय दृष्टि से मजदूर किसान या कारीगर का जीवन ही सच्चा एवं सर्वोत्कृष्ट है। पसीना बहाकर रोटी खाना ही यज्ञ है।[7]

सर्वोदय की महान सोच और तद्नुसार व्यावहारिक जीवन में उसे समर्थ रूप से अंगीकार कर पाना उतना सहज तो नहीं है किंतु असम्भव भी नहीं है। देश के भ्रमित युवाओं को सच्चाई तथा ईमानदारी का जीवन ,शारीरिक परिश्रम , सर्वजन हिताय जैसे लक्ष्यों को जीवन में उतारने की आवश्यकता समझाना नितांत जरूरी हो गया है जिससे सर्वोदय सही अर्थो में समाज के हर तबके के लिए उपयोगी तथा सार्थक बन सके।

सुबहवाले को जितना, शामवाले को भी उतना ही,

प्रथम व्यक्ति को जितना, अंतिम व्यक्ति को भी उतना ही,

इसमें समानता और अद्वैत का वह तत्व समाया है, जिस पर सर्वोदय का विशाल प्रासाद खड़ा है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सन्दर्भ –

1. हरिजन सेवक 24.10.1948
2. जॉन वी. बॉनड्यूरेन्ट–द गांधीयन फिलोसोफी ऑव कॉनफिलक्ट , प्रकाशक– प्रिनशेटन 1958 , पृ. 156
3. गांधी, मोहनदास करमचंद– सर्वोदय का सिद्धान्त,पृ. 28 ,नवजीवन मुद्राणालय, अहमदाबाद
4. आत्मकथा ,भाग 4, अध्याय 17
5. गांधी, मोहनदास करमचंद– सर्वोदय का सिद्धान्त, पृ. 21 ,नवजीवन मुद्राणालय, अहमदाबाद
6. बी. के. गोखले– पॉलिटिकल साइंस (थ्योरी एंड गवर्नमेंट म ीनरी) हिमालिया पब्लि ंग हॉउस
7. आत्मकथा ,भाग 4, अध्याय 17